NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार

www.nextias.com

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार

सन्दर्भ

- हाल ही में, 'समूह चार' देशों - भारत, ब्राजील, जर्मनी और जापान - के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 79वें सत्र के दौरान स्थिति का आकलन करने और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार की संभावनाओं पर चर्चा करने के लिए सम्मलेन किया।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)

- यह संयुक्त राष्ट्र के छह मुख्य अंगों में से एक है और इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा बनाए रखना है।

वर्तमान संरचना

- UNSC में वर्तमान में पाँच स्थायी सदस्य (P5) हैं: चीन, फ्रांस, रूस, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका।
- इन P5 सदस्यों के पास वीटो पावर है, जो उन्हें किसी भी महत्वपूर्ण प्रस्ताव को रोकने की अनुमति देता है।
- इसके अतिरिक्त, दो वर्ष के कार्यकाल के लिए चुने गए दस गैर-स्थायी सदस्य हैं।
- 50 से अधिक संयुक्त राष्ट्र सदस्य देश कभी भी सुरक्षा परिषद के सदस्य नहीं रहे हैं।

UNSC चुनाव

- प्रत्येक वर्ष महासभा दो वर्ष के कार्यकाल के लिए पांच गैर-स्थायी सदस्यों (कुल 10 में से) का चुनाव करती है।
- 10 गैर-स्थायी सीटें क्षेत्रीय आधार पर इस प्रकार वितरित की जाती हैं:
  - अफ्रीकी और एशियाई राज्यों के लिए पांच।
  - पूर्वी यूरोपीय राज्यों के लिए एक।
  - लैटिन अमेरिकी और कैरेबियाई राज्यों के लिए दो;
  - पश्चिमी यूरोपीय और अन्य राज्यों के लिए दो

G4 राष्ट्र

- इनमें ब्राज़ील, जर्मनी, भारत और जापान शामिल हैं, ये चार देश हैं जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीटों के लिए एक-दूसरे की दावेदारी का समर्थन करते हैं।
- G-7 के विपरीत, जहाँ सामान्य बात अर्थव्यवस्था और दीर्घकालिक राजनीतिक उद्देश्य हैं, G-4 का प्राथमिक उद्देश्य सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्य सीटें प्राप्त करना है।
- संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के बाद से इन चारों देशों में से प्रत्येक देश परिषद के निर्वाचित गैर-स्थायी सदस्यों में शामिल रहा है।

सुधार की आवश्यकता

- **सदस्यता की श्रेणियाँ:** G4 के मंत्री UNSC सदस्यता की स्थायी और अस्थायी दोनों श्रेणियों का विस्तार करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। ऐसा करके, उनका उद्देश्य विकासशील देशों और अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले देशों की भागीदारी को बढ़ाना है। यह विस्तार परिषद को अधिक प्रतिनिधि और वैध बनाएगा।

- **क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व:** G4 विभिन्न क्षेत्रों के लिए बेहतर प्रतिनिधित्व के महत्व पर प्रकाश डालता है। अफ्रीका, एशिया-प्रशांत और लैटिन अमेरिका और कैरिबियन UNSC में मजबूत आवाज़ के हकदार हैं।
  - G4 एज़ुल्विनी सर्वसम्मति और सिर्ते घोषणा के आधार पर सामान्य अफ्रीकी स्थिति (CAP) के लिए अपने समर्थन की पुष्टि करता है।
- **पाठ-आधारित वार्ता:** G4 के मंत्री अंतर-सरकारी वार्ता (IGN) में धीमी प्रगति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हैं। वे सुधार प्रक्रिया को शुरू करने के लिए तत्काल पाठ-आधारित वार्ता का आह्वान करते हैं।
- **वैश्विक असंतुलन:** भारत के प्रभारी और संयुक्त राष्ट्र में उप स्थायी प्रतिनिधि ने बताया कि हाल की भू-राजनीतिक घटनाओं ने अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की रक्षा करने में UNSC की सीमाओं को प्रकट किया है।
  - 1945 की वास्तविकताएँ, जब परिषद की स्थापना हुई थी, आज के भू-राजनीतिक परिदृश्य के समान नहीं हैं।
  - G4 राष्ट्रों का दृढ़ विश्वास है कि परिषद के किसी भी सुधार में प्रतिनिधित्व की कमी को दूर करना चाहिए, विशेष रूप से स्थायी श्रेणी में। ऐसा न करने से वर्तमान असंतुलन बढ़ जाएगा।
- **अत्यावश्यकता और महत्व:** G4 देश मानते हैं कि तत्काल सुधार आवश्यक है। इसके बिना, UNSC हमारे समय की दबावपूर्ण वैश्विक चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने में अक्षम रहेगी। ये चुनौतियाँ संघर्ष समाधान और शांति स्थापना से लेकर जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय संकट तक हैं।

भारत का दृष्टिकोण

- भारत ने लगातार UNSC सुधार का समर्थन किया है। उसका मानना है कि एक प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी के रूप में, वह परिषद में एक स्थायी सीट का हकदार है।
- यह विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए समान प्रतिनिधित्व की आवश्यकता पर बल देता है।
- भारत सही ढंग से इस बात पर बल देता है कि UNSC सुधार एक सामूहिक प्रयास है, यह कहते हुए कि यह केवल एक शक्तिशाली राष्ट्र की जिम्मेदारी नहीं है; सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्यों को इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।

प्रस्तावित सुधार

- G-4 ने परिषद की सदस्यता का विस्तार करके इसमें अधिक स्थायी और गैर-स्थायी सदस्यों को शामिल करने का प्रस्ताव रखा।
- अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण और प्रभावी UNSC को आकार देने में अफ्रीका की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
- सार्थक सुधारों के बिना, परिषद के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में अक्षम होने का जोखिम है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार में चुनौतियाँ

- UNSC में सुधार करना आसान प्रक्रिया नहीं है। विभिन्न देशों के पास आगे बढ़ने के तरीके पर अलग-अलग विचार हैं। कुछ राष्ट्र प्रगति में देरी करने के लिए प्रक्रियात्मक रणनीति का उपयोग करते हैं, जिससे सार्थक सुधार में बाधा आती है।
- **प्रक्रियात्मक बाधाएँ:** UN चार्टर में संशोधन करने के लिए सदस्य देशों के बीच सामान्य सहमति की आवश्यकता होती है, जो अलग-अलग पदों को देखते हुए चुनौतीपूर्ण हो सकती है।
- **आकार और शर्तें:** विस्तारित परिषद के लिए स्वीकार्य आकार और शर्तों पर कोई सहमति नहीं है।
- **वीटो प्रावधान:** पाँच स्थायी सदस्यों (P5) द्वारा धारण की गई वर्तमान वीटो प्रणाली एक विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है। नए स्थायी सदस्यों को वीटो शक्ति प्रदान करना असहमति का विषय है।

- **प्रभावशीलता अनिश्चितता:** चांहे परिषद को अधिक प्रतिनिधि बनाने के लिए विस्तारित किया गया हो, लेकिन इस बारे में संदेह बना हुआ है कि क्या इससे इसकी कार्यप्रणाली में सुधार होगा।
- **सुरक्षा चुनौतियाँ और भविष्य का शिखर सम्मेलन:** संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठकों का सत्तरवाँ दौर, जिसे 'भविष्य का शिखर सम्मेलन' के रूप में जाना जाता है, हाल ही में हुआ। यह शिखर सम्मेलन बहुपक्षीय सहयोग को पुनर्जीवित करने का एक अद्वितीय अवसर था, लेकिन चल रही सुरक्षा चुनौतियों के कारण इसे महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ा।
- **कॉफी क्लब:** यह एक अनौपचारिक समूह है जिसमें 40 से अधिक सदस्य देश शामिल हैं, जिनमें से अधिकतर मध्यम आकार के देश हैं जो बड़ी क्षेत्रीय शक्तियों द्वारा स्थायी सीटें पाने का विरोध करते हैं, पिछले छह वर्षों में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधारों को रोकने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हालांकि, भारत बदलाव के लिए प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत की तैयारी

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के वर्तमान अस्थायी सदस्य के रूप में भारत दिसंबर में अपना दो वर्ष का कार्यकाल पूरा करेगा।
- भारत बड़ी ज़िम्मेदारियाँ लेने के लिए तैयार है, लेकिन साथ ही वैश्विक दक्षिण द्वारा सामना किए गए ऐतिहासिक अन्याय को दूर करना चाहता है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- चूंकि विश्व जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है - संघर्षों और मानवीय आपात स्थितियों से लेकर जलवायु परिवर्तन और महामारी तक - UNSC की प्रभावशीलता महत्वपूर्ण है। सुधार के लिए G4 देशों का प्रयास यह सुनिश्चित करना है कि परिषद हमारे परस्पर जुड़े और गतिशील वैश्विक परिदृश्य की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करे।
- UNSC में तत्काल सुधार के लिए G4 का आह्वान एक अधिक समावेशी, उत्तरदायी और प्रभावी संयुक्त राष्ट्र की आवश्यकता को रेखांकित करता है - एक ऐसा संगठन जो मानवता के सामने आने वाले बहुआयामी मुद्दों को सही मायने में संबोधित कर सके।

Source: TH

■■■■

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. क्या आप मानते हैं कि अधिक न्यायसंगत वैश्विक शासन सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार आवश्यक है, या क्या ऐसे परिवर्तन अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने में परिषद की प्रभावशीलता को कमजोर करेंगे?